This question paper contains 4 printed pages]

आपका अनुक्रमांक .....

6162

B.A. (Hons.) बी. ए. (ऑनर्स)/III E

HINDI — Paper VII

हिंदी — प्रश्न-पत्र VII

(आधुनिक काव्यधारा - 2 : प्रगतिवाद और नई कविता)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 38

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 5×3=15

(क) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त ।

अथवा

शान्त था तपोवन सांध्य सूर्य की मरीचियों में
हौले से हिलायी गयी सरयू की वीचियों में
इंगुदी पलाश-शाल मौन मंन खड़े थे चुपके
चंचल हवा के प्राण उन पर पड़े थे चुपके ।

P.T.O.

(ख) वह समाज के त्रस्त क्षेत्र का मस्त महाजन,
गौरव के गोबर-गनेश-सा मारे आसन,
नारिकेल-से सिर पर बाँधे धर्म-मुरैठा,
ग्राम बधूटी की गौरी-गोदी पर बैठा,
नागमुखी पैतृक सम्पत्ति की थैली खोले
जीभ निकाले, बात बनाता करुणा घोले ।

अथवा

उसको समझा दिया गया है कि यहाँ
ऐसा जनतंत्र है जिसमें
जिन्दा रहने के लिए
घोड़े और घास को
एक-जैसी छूट है
कैसी विडम्बना है
कैसा झूठ है
दरअसल, अपने यहाँ जनतंत्र
एक ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है ।

(ग) मैं सब जानता हूँ पर बोलता नहीं
मेरा डर मेरा सच एक आश्चर्य है,
पुलिस के दिमाग में वह रहस्य रहने दो
वे मेरे शब्दों की ताक में बैठे हैं
जहाँ सुना नहीं उनका गलत अर्थ लिया और मुझे मारा।

अथवा

फिर बाढ़ आ गई होगी उस नदी में
पास का फुटहिया बाज़ार बह गया होगा,
पेड़ की शाखों में बंधे खटोले पर
बैठे होंगे बच्चे किसी काछी के
और नीचे कीचड़ में खड़े होंगे चैपाये
पूँछ से मक्खियाँ उड़ाते ।

2. 'नागार्जुन जनभाषा के सशक्त प्रगतिशील कवि हैं ।' इस कथन की समीक्षा कीजिए । 8

अथवा

'रघुवीर सहाय की कविता राजनीतिक स्थितियों और सवालों पर मुखरता से क़रारा व्यंग्य करती है ।' इस कथन की विवेचना कीजिए ।

3. भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं के आधार पर उनकी काव्यभाषा की सहजता पर विचार कीजिए । 8

अथवा

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में 'प्रगतिशील चेतना' पर प्रकाश डालिए ।

4. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 7

(क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में शिल्प

(ख) 'सिंदूर तिलकित भाल' की मूल संवेदना

(ग) 'चेहरा' की व्यंग्य चेतना ।